३. चन्द्रसिंह बिरकाली *

आधुनिक राजस्थानी साहित्यकार के कवि चन्द्रसिंह बिरकाली का जन्म श्रावण सुदी 1969 ई में हुआ अर्थात 27 अगस्त ~~1912~~ 1969 मे हनुमान गढ़ जिले की नोहर तहसील के बिरकाली गांव मे ठा. श्री हरिसिंह जी सौगात के घर में हुआ। 14 सितम्बर ~~1992~~ 1992 को ये महा कवि राजस्थानी भाषा के सपुत का देहवान हुआ तथा स्वर्ग में पधारें। इनकी यात्रा सात साल की उम्र में शुरु हुई सन 1914 में बादली की रचना को हर राजस्थानी प्रेमी ने समान किया। चन्द्रसिंह ने बादली, लू, बालप्रसाद, हमुकरणी, साझ, बसन्त, वीर, डाकर, राधा, ज्योडणी बातडल्या, बाड़ आदि काव्य की रचना की है।

1. गीत

गीत कविता में कवि एक नारी हृदय मे जाग्रत प्रेम और विरह की भावना को अभिव्यक्त किया है, जब वह एक प्रेमी का प्रेमी उससे दुर चला जाता है तो उसे रह रहकर अपने प्रेमी की याद सताती है और सदैव अपने प्रेमी की यादो में खोई रहती है और उसे सदैव यह लगता है कि रात्रि में अपने प्रेमी से मिलती है बाते करती है। उसे वो अपनी सखी से बताती है सखी मैंने स्वप्न में सपने प्रियतम के साथ रात सवारी। मैंने सपने प्रियतम को सेज पाकर थर थर कापने लगी। उसे देखकर एक बार सरमाई एक पल मे उसकी आंखो मे समा गई। जैसे एक बेल पेड से लिपटती है उसी प्रकार मैं भी लिपट गई। फिर एक दुसरे के

नैनो में समाहित हो गई। इस प्रकार कवि ने प्रेमी के मनो भाव को इस कविता में अभिव्यक्त किया है

2. बसंत

इसके अन्तर्गत कवि ने बसन्त ऋतु मे होने वाले परिवर्तन और ऋतु की उमंग-उल्लास को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है कि शीत ऋतु के पश्चात जब बसन्त ऋतु आती है तो परिवर्तन होने लगता है सूर्य धीरे-धीरे दक्षिणायन से उत्तरायन चलने लगता है शीत ऋतु में कमी होने लगती है सूर्य की किरणों में तेजी आने लगती है अब तक जो चलने वाली हवाएँ ठण्डी लगती लगती थी वह अब बसन्त ऋतु में ठण्डी हवाएँ सुहानी लगती है इसी कारण मौसम ~~खुश गवार~~ खुशगवार हो जाता है पतझड़ के पश्चात नई नई कोंपले पत्ते खिलते है इसी कारण इस ऋतुओं को राजा कहा जाता है इस (ऋतु) सुहाने मौसम में पेड़ों व पौधों मे पुष्प पल्लीत होते है तथा प्रकृति में ऐसा लगता है कि मानों फागन का त्योहार मनाया जा रहा है और ये फाग का त्योहार हमेशा बना रहे। यह जानकर हम माली से कामना करते है कि इन फूलों को अपनी खुशी के लिये मत तोड़ क्योकि इस फूल को टूट जाने पर प्रकृति के सौन्दर्यता में कमी आती है इस सौन्दर्यता के कारण प्रकृति में एक उद्यापन नजर आता है और पुष्प अलग होकर थोड़ी देर मे मुरझा जाते है फिर वह काम के नही होते

Scanned by CamScanner

प्रकृति का मानना है कि कुछ क्षण पैसे या खुशी के लिये फूलों को तोड़कर प्रकृति की खुशी को कम नहीं करना चाहिये। जब तक वृक्ष हरे-भरे रहेंगे - पुष्प पल्लीत रहेंगें। तभी बसन्त ऋतु देखी जाती है इस प्रकार कवि ने बसन्त को होने वाली प्राकृतिक वर्णन प्रकृति की भावनाओं को अभिव्यक्त किया है।

3. लु (रेगिस्तान की)

इस कविता में कवि ने लू के चलने पर या ग्रीष्म ऋतु के आने पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तन को चित्रांकित किया है जैसे - बसन्त ऋतु के पश्चात ग्रीष्म का प्रारम्भ होता है जो प्रकृति में मनोहारी रूप था 'जो नई-नई कोपले खिली थी वो ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होने पर परिवर्तित होने लगती है जो पुष्प-पत्ती पेड़ो के झड़ती है हरी बेल वृक्ष से सुख जाती है जैसे-जैसे ग्रीष्म ऋतु बढ़ती है वो हिमालय का बर्फ पिघलकर पानी के रूप में बहने लगता है ग्रीष्म ऋतु, वैशाख, मास आता है तो चारों तरफ सुखा एवं तालाबों का पानी सुखने लगता है जेठ मास में गर्मी के कारण हवाएँ लू का रूप धारण कर लेती है लू के साथ रेत ऑट मिट्टी उड़ती है जिसके कारण ग्रीष्म ऋतु का रूप विकराल दिखाई देता है पेड़ पौधे सूख कर ठूठ बन जाते है माँ अपने बच्चों को आचल से बचाने का जतन करती है मनुष्य, पक्षी शीतलता के लिये इधर-उधर भटकते है कुओं में जो पानी होता है वो सुख जाता है जमीन भी

Scanned by CamScanner

धीरे धीरे बजंर बनती है। चारों ओर उजाड़ हो जाता है, पशु पक्षी मरने लगते हैं इस प्रकार लू की तीव्रता से जीव जन्तु मनुष्य सब परेशान हो जाते हैं फिर जेठ माह के बाद आषाड़ माह में आसमान में काली बादली छाने लगती है।

प्रत्येक प्राणी इन्तजार करता है कि अब वर्षा ऋतु का आगमन होगा। इस प्रकार कवि ने ग्रीष्म ताप में लू की तीव्रता और इससे प्रकृति में होने वाले प्रभावों का चित्रण का सार्थक प्रयास किया है।

4. बादली

बादली कविता के अन्तर्गत कवि ने भाव अभिव्यक्त किया है कि वर्षा के बिना सभी का जीवनयापन अत्यधिक होता है। मनुष्य प्रकृति और वनस्पति सब सुखकर उजाड़ हो जाते हैं और आषाढ़ मास आने पर सभी जीवन दायिनी बादली का इन्तजार रहता है। मानव कहता है कि हे! बादली इस मरूप्रदेश में ना तो नदी है ना नाले हैं और नाही तालाब है जिससे पानी भरा रहे। वर्ष भर उससे जीवनयापन हो ऐसा कोई आसरा नही होने पर मरू बादली एक तेरा ही आसरा है। तु मरू में खूब पानी बरसा ताकि खूब पानी हो सके, तु बिना बरसे तु यहां से मत जा बादली, तुमे मु ही बिना बरसे रेगिस्तान से नही जाना चाहिये क्योकि तेरा प्रेमी मरूधर तेरे साथ अठखेली खेलने के लिये तुम्हे बुलाता है यानी वह तुमसे हिलमिल जाना चाहता है क्योकि जब वर्षा

Scanned by CamScanner

वर्षा का पानी रेत पर गिरता है तुरन्त रेत में समाहित हो जाता है इसलिये मरुधर यहा के प्राणी बड़ी उमंग से बादली को मनुहार करते है कि वो आए बारिश की झड़ी लगा दे। ताकि शुभ सुकून मिल सके तब मरुधर मे पानी और नवजीवन की आस बन्धती है कि बादली आई है तो पानी अवश्य बरसेगा और जब काली बादली आसमान में छा जाती है तो आसमान में अठकलीया करती है जिसमें कभी सूर्य दिखाई देता है कभी बादली की आड़ में छूप जाता है कभी छूप सा रूप दिखाई देता है, ठण्डी बादली के साथ यह बादली ईधर-ऊधर आसमान में घुमती रहती है और जब यह बादली बहुत ज्यादा इकट्ठी हो जाती है तो आपस में टकराने लगती है इसके टकराने से बिजली चमकती है धीरे-धीरे बादली का रंग काला होता जाता है और बादली का यह रूप देखकर ~~जल~~ जंगल मे रहने वाले पक्षी जल की आस में ऊपर गुर रके मीठे राग गाने लगते है तो ऐसा लगता है कि मानों यह ~~मानी~~ पक्षी बादली के आने पर बधाई के गीत गा रहे हैं और बादलीयो के आपस में टकराने से पानी बरसने लगता है पहले पानी छोटी बूदों ~~से~~ में गिरता है धीरे-धीरे वर्षा का वेग ~~बदला~~, बढता जाता है चारों तरफ बिजली की कड़क और पानी ही पानी हो जाता है और इस पानी के कारण रेगिस्तान के छोटे-मोटे सभी गढ़े और तालाब भर जाते है नदी नालों मे पानी आ जाता है चारो तरफ पानी होने पर नीचे यहां धरती पर पानी ही पानी ~~ही~~ दिखाई देता है।

Scanned by CamScanner

तो आसमान सफेद बादलों से भरा दुग्ध सा प्रतीत होता है और श्रावन मास में वर्षा की झड़ी दिन रात लग जाती है। बच्चे आनन्द से भर उठते है ताल - तलैया : पोखरों में भरे पानी में खेलते है और पानी के साथ मौज मस्ती का आनन्द लेते है तो इसी श्रावन मास में तीज का त्योहार आता है चारों तरफ खुशी का वातावरण होता है। महिला उमंग के साथ सुहाग का तीज मनाती है। पूजा की जाती है। श्रावन मास के इस आनंद को जब आसमान में इन्द्र, धनुष दिखाई देता है। तब बच्चे उसे देखकर खुश होते है। इस प्रकृति को देखकर आनन्द से भर जाते है।

इस प्रकार कवि अपनी भावनाओं को बता बादली के प्रति प्रकट करने का सार्थक प्रयास, एक सटीक वर्णन किया है।

Scanned by CamScanner